SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

चित्रकार शैलेन्द्रनाथ डे की मेघदूत चित्रावली

मिठाई लाल, शोधार्थी, चित्रकला विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
मिठाई लाल, चित्रकला विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/07/2020
Revised on : -----
Accepted on : 18/07/2020
Plagiarism : 02% on 13/07/2020

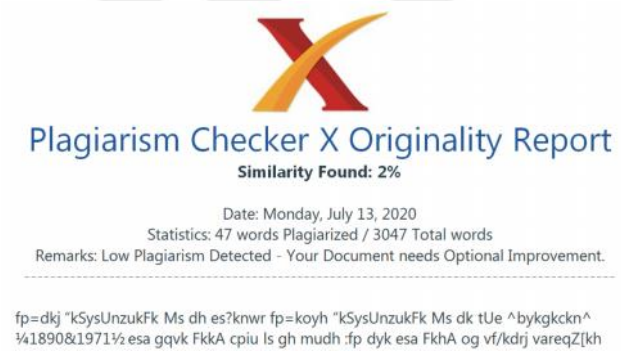

शोध सारांश :

शैलेन्द्रनाथ डे का जन्म 'इलाहाबाद' (1890–1971) में हुआ था। बचपन से ही उनकी रूचि कला में थी। वह अधिकतर अंतर्मुखी थे। साहित्य में भी उनकी गहरी रूचि थी उनके अनुसार–[1]''मानव जीवन मूक भावों को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाने वाली कला की एक चाक्षुष माध्यम है''। इनकी शिक्षा सुप्रसिद्ध चित्रकार एवं कला मर्मज्ञ अवनीन्द्र नाथ टैगोर के सानिध्य में हुई। शैलेन्द्र नाथ डे के प्रारम्भिक चित्रों में जैसे कि ''यशोदा और बालक कृष्ण'' में राजस्थानी शैली एवं मुगल शैली का स्पष्ट प्रभाव दिखलायी पड़ता है। समय के साथ जैसे–जैसे शैलेन्द्र नाथ डे की कला पुष्ट होती गयी उनके रंग और रेखायें भी सूक्ष्म और गहरी होती गयीं। बनारस के भारत कला भवन और कोलकाता में इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियंटल आर्ट में कुछ समय तक कार्य किया तत्पश्चात् पुनः इलाहाबाद आ गये।

मुख्य शब्द :

शैलेन्द्रनाथ डे, चित्रकला, मेघदूत, कृष्ण, मुगल शैली।

उन दिनों वहाँ पर डॉ0 रायकृष्णदास भारतीय संस्कृति और कला संरक्षण के लिए कठोर परिश्रम कर रहे थे। उन्होनें शैलेन्द्र नाथ डे की कला प्रतिभा को पहचान कालिदास के कालजयी खण्ड काव्य मेघदूतम पर चित्रांकन करने का आग्रह किया। इस तरह शैलेन्द्र नाथ डे ने रायकृष्णदास एवं अवनीन्द्र नाथ टैगोर की सहायता से मेघदूत पर आधारित चित्रों की सुन्दर श्रंखला तैयार कर ली जिसका अधिकतर संग्रह भारत कला भवन में संग्रहित है। इसके साथ ही मैसूर के जगमोहन महल की कला वीथिका रामगोपाल विजयवर्गीय के किसी संग्रह में है। शैलेन्द्रनाथ ने मुख्यतः पौराणिक कथाओं का चित्रण किया है। कालिदास के मेघदूत में प्रकृति का सुन्दर वर्णन हुआ है। मानव और प्रकृति के बीच सुन्दर

सम्बन्धों को दर्शाया गया है जिसमें अपनी पत्नी के वियोग में तड़पता यक्ष, आषाढ़ ऋतु में व्याकुल हो उठता है और अपनी पत्नी को संदेश भेजता है घने बादलों के माध्यम से। पत्नी के वियोग में शैलेन्द्र नाथडे ने यक्ष के दर्द को यथावत अपने चित्रों में उतारा है। शैलेन्द्र नाथ डे को कई सम्मानों से सम्मानित किया गया पर उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान रहा कि उन्होनें अपने छात्रों को एक कुशल चित्रकार बनाया जिसमें रामगोपाल विजयवर्गीय, देवकीनंदन शर्मा, गोपालघोष, तथा शम्भूनाथ जैसे चित्रकार शामिल हैं।

शैलेन्द्रनाथ द्वारा चित्रित मेघदूत श्रंखला काफी प्रसिद्ध हुई और आज भी यह भारत कला भवन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संग्रहालय में सुरक्षित है। इस श्रंखला के चित्रण के पीछे भी एक संयोग्य है। अवीन्द्र नाथ टैगोर 1915 में मंसूरी गये थे उसके एक महीने पहले से ही रायकृष्ण दास वही पर थे। रवीन्द्र नाथ के घर के सामने से ही रायकृष्ण दास जी नित्य टहलने जाते थे। इस प्रकार दोनों लोगों की अक्सर मुलाकात हो जाती थी। यहीं पर रायकृष्ण दास ने अवनीन्द्र नाथ टैगोर से शैलेन्द्र नाथ डे ''मेघदूत चित्रावली बनवाने का विचार व्यक्त किया। इस पर अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने स्वीकृति देते हुये बताया कि शैलेन्द्र नाथ डे की शिक्षा पूर्ण होने के साथ मैं एक पत्र देकर उन्हे आपके पास भेजूँगा। वे इलाहाबाद में अपने घर पर ही रहेंगे तथा चित्रावली का काम भी करेंगे। 1916 में अवनीन्द्र नाथ टैगोर का पत्र लेकर शैलेन्द्र नाथ डे, रायकृष्णदास से इलाहाबाद में मिले। उन्होनें शुरू में शैलेन्द्र नाथ डे को 'गरूण वाहन पर बैठे अष्ठभुज' चित्र बनाने को कहा जो आज भी रायकृष्णदास के व्यक्तिगत संग्रह में है। 1916 में रायकृष्णदास सपरिवार काशी आ गये जिनके साथ शैलेन्द्र नाथ डे भी आ गये और वे खजुरी नामक स्थान पर रहने लगे। वही पर मेघदूत चित्रावली बनाना शुरू किया। रायकृष्णदास के निकट बैठकर ही ये चित्रों की रचना करते तथा दोनो लोगों में विचार विमर्श भी होता था। मेघदूत के चित्रांकन के लिए पहाड़, नदी, झरना, मेघ आदि के अध्ययन हेतु सन् 1916 में ही दोनों लोग पुनः मंसूरी गये और मई से अक्टूबर तक वही रहे। हिमालय की चोटी पर मेघों का अवागमन नदी झरना, झील एवं पशु पक्षियों का बारीकी से अध्ययन किया।

जब शैलेन्द्र डे वापस लौटे तो वे अपनी पत्नी को भी इलाहाबाद से काशी ले आये। दिन में सुबह 10 बजे से 4 बजे तक शैलेन्द्र रायकृष्णदास के पास बैठकर चित्र बनाते थे और अधिकतर समय अपने चित्रण में ही बिताते थे। धीरे–धीरे इनकी पत्नी को एकाकीपन महसूस होने लगा। वह अक्सर कोशिश करती थीं कि उनके लिये भी शैलेन्द्र समय निकालें पर ऐसा नही हो सका इस तरह धीरे–धीरे उनकी पत्नी की व्यथा बढ़ती ही गयी और अनंतः वह यह तक कहने लगी कि इससे तो बेहतर है मर जाना।

दीपावली के दिन शैलेन्द्र नाथ रायकृष्ण दास के साथ संकटमोचन दर्शन करने गये थे और जब वे लौटे तो रायकृष्ण दास जी शैलेन्द्रनाथ के घर तक उन्हें छोड़ने गये रायकृष्ण दास जी ने शैलेन्द्र से कहा कि घर में से बर्तन ले आइये मैं प्रसाद दे दूँ। जैसे ही वे घर के अन्दर गये वहाँ भारी मात्रा में लोग इकट्ठा थे और कमरे में धुआँ भी उठ रहा था और दरवाजा अन्दर से बन्द था। यह देखकर वे हतप्रभ हो गये और रायकृष्णदास जी को बुलाकर अन्दर ले गये। दरवाजा तोड़ने पर पता चला कि उनकी पत्नी जलकर मृत पड़ी हैं। वह एकाकीपन के चलते ऐसा कदम उठाने पर मजबूर हुई थीं। पत्नी के निधन से शैलेन्द्रनाथ के मन को गहरा आघात लगा। वे एक महीने का अवकाश लेकर इलाहाबाद आये। इसके बाद पुनः काशी लौटने पर फरवरी 1917 में उन्होनें मेघदूत चित्रावली पूर्ण की जिसमें विरहणी याक्षिणी में अपनी पत्नी की वेदना व विरही यक्ष के रूप में स्वयं को अंकित किया।मेघदूत पर शैलेन्द्रनाथ डे के एक दर्जन चित्र हैं जो श्लोकों पर आधारित है। जिनका विवरण निम्नवत है :

विरही यक्ष :

''मेघलोके भवति सुखिनाऽप्यन्यथावृति चेतः

कण्ठाश्लेषप्रणायिनि जने कि पुनर्दूरसंस्थे''।। पू0मे0/3

हिन्दी अनुवाद : बादलों को देखकर जब सुखी लोगों का मन डोल जाता है। तब विरही यक्ष का क्या कहना जो दूर देश में विरह से व्याकुल अपनी प्रियतमा को गले लगाने के लिए तड़त उठता है।

चित्र सं. 1 : विरही यक्ष

चित्र व्याख्या : चित्र में एक यक्ष का चित्रण है जो अपनी प्रेयसी के विरह में इतना कमजोर हो गया है कि उसके हाथ पैर सभी कुशकाय हो गये हैं। यक्ष के पीछे पहाड़ी दृश्य है। और चारों तरफ हरियाली फैली हुई है। आषाढ़ का पहला दिन रहता है जब काले बादल घिरते है और पहली बारिश की बूंद से धूप तपती धरती से हरियाली फूट पड़ती है। इसी बीच यक्ष का मन अपनी प्रियतमा से मिलने के लिए तड़प उठता है।यह पेटिवाश पद्धति में सजी है जिसमें भारतीय मिनिचेयर की झलक है।

अल्कापुरी में सोती हुई यक्षिणी :

चित्र सं. 2 :
अल्कापुरी में सोती हुई यक्षिणी

तास्मिकाले जलद यदि सा लब्धनिद्रासुखास्या
दन्वास्यैनां स्तनितावमुखी याममात्रं सहस्व
मामदस्याः प्रणायिनी मयि स्वलनलब्धे कथञ्चित्सद्यः
कण्ठच्युत भुजलताग्रन्थि गाढोपमूढम्।। उ0मे0/39

हिन्दी अनुवाद : यक्षिणी अल्कापुरी नगर में अपने महल में है। वह नींद में शायद अपने पति का आलिंगन कर रही है। हे मेघ उस समय तुम बिल्कुल गर्जन मत करना। कहीं उसकी नींद टूट न जाये और उसका स्वप्न भंग न हो जाये।

चित्र व्याख्या : इस चित्र में यक्षिणी का श्लोक के आधार पर बहुत ही यथार्थ चित्रण है। यक्षिणी फर्श पर लेटी हुई है और उसके बाल बिखरे हुये हैं। यक्षिणी के वस्त्र भी इधर–उधर बिखरे हैं। ऐसा लग रहा है कि उसे कुछ होश नही हैं। कमरा बिल्कुल खाली है सन्नाटे से भरा हुआ। एक छोटी खिड़की है जिससे बादल कमरे की तरफ बढ़ रहे हैं। चित्र को देखकर दर्शक स्वयं समझ जायेगा कि कोई विरहणी अपने प्रियतम की याद में व्याकुल है। दीवार में एक आला है जिसमें ढक्कनदार दीपक रखा हुआ है। रंगों की सांमजस्यता बहुत ही सुन्दर है।

मृणाल इकट्ठा करते हंस :

चित्र सं. 3 :
मृणाल इकट्ठा करते हंस

''कर्त्तुयच्च प्रभवति महीं मुच्छिलीन्ध्रामवन्ध्यां,''
तच्छुत्वा ते श्रष्वणसुमगं गार्जितं मानसोत्काः
अकैलासाद्विसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः
'सपंत्स्यन्ते नभसि भवती राजहंसा : सहाया :।। पू0में0/11

हिन्दी अनुवाद : जिसके प्रभाव से पृथ्वी खुम्भी की टोपियों का फुटाव लेती है और हरी भरी हो उठती है,' हे मेघ तुम्हारे सुहावने गर्जन को जब कमलवन में राजहंस सुनेंगे, तब मानसरोवर जाने की उत्कंठा से अपनी चोंच में मृणाल के अग्रखंण्ड का पथ–भोजन लेकर वे सभी कैलाश तक तुम्हारे साथ जायेंगे।

चित्र व्याख्या : इस चित्र में प्रकृति का बहुत ही सजीव चित्रण हुआ है। पर्वतों पर मेघ घिरा हुआ है एवं कुछ हंस उड़ रहे हैं। शिला चट्टानों के बीच सरोवर में कमल खिले हुये हैं। पत्थरों के बीच मशरूम को उगते हुये दिखाया गया है। कुछ हंस अपने चोंच से मृणाल इकट्ठा कर रहे हैं एवं कुछ मृणाल लेकर उड़ रहे हैं। यह प्रकृति चित्रण का बहुत ही उत्कृष्ट उदाहरण है। इस चित्र में सौग्य रंगो का प्रयोग है।

चित्र बनाता यक्ष :

चित्र सं. 4 :
चित्र बनाता यक्ष

त्वामालिष्य प्रणयकुंपितां धातुरागैः शिलाया
मात्मानं ते चरण पतितं यावदिच्छामि कर्तुम
अस्त्रेतावत्मुहुरूपचितैर्दुष्ठिरालुप्यते मे
क्रूरस्तास्मिन्नापि न सहते संगमं नौ कृतान्तः।। उ0में0/42

हिन्दी अनुवाद : हे प्रिय प्रेम में रूठी हुई तुमको गेरू के रंग से चट्टान पर लिखकर जब मैं अपने आपको तुम्हारे चरणों में चित्रित करना चाह रहा हूँ उसी वक्त आँसूओ से मेरी आँखे भीग जाती हैं। निष्ठुर दैव को यह भी नही मंजूर कि हम चित्र में भी मिल सके।

चित्र व्याख्या : यह चित्र बहुत ही प्रसिद्ध है जिसमें विरक्षी यक्ष को शैलेन्द्रनाथ डे ने शिला पट्ट पर चित्र बनाते हुये चित्रित किया है। यक्ष दुःखी होकर घुटनों के सहारे बैठा है। उसके दाहिने हाथ में ब्रश है। यक्ष की मनोस्थिति सही नही है क्योंकि इस चित्र के प्रसंग में यह वर्णित है कि जब वह अपनी प्रियतमा का चित्र बनाता है। तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। जिससे वह चित्र नहीं बना पाता। यक्ष चट्टानों पर बैठा है एवं परिप्रेक्ष्य में पर्वत को दिखाया गया है। दूर एक वृक्ष को चित्रित किया गया है एवं कहीं–कहीं छोटी–छोटी झाड़ियों को भी दिखाया गया है। पूरे चित्र में एक उदासी है और यही इस चित्र की विशेषता है।

यक्ष की याद में यक्षिणी :

चित्र सं. 5 :
यक्ष की याद में यक्षिणी

तां जानीथा : परिमितकथां जीवितं में द्वितीयं
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमवैकाम।
गाढोत्कण्ठां गुरूष दिवसेस्वेषु गच्धन्सुबालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पदिम्नीवान्यरूपाम् ।। उ0में0/23

हिन्दी अनुवाद : मेरे दूर चले आने के कारण अपने साथी से बिछड़ने के कारण उस प्रियतमा को तुम मेरा प्राण ही समझों। मुझे ये प्रतीत होता है कि विछोह के कारण इन कठिन समय में वो कुछ ऐसी हो गयी है जैसे सर्दियों में कमलिनीय हो जाती है।

चित्र व्याख्या : इस चित्र में यक्षिणी अपने महल के बाहर एक चबूतरे के सहारे अपना बायां हाथ गाल पर रखें हुये खड़ी है। वह अपने प्रियतम की याद में खोई है। कुछ घने मेघ उसके महल के चारों तरफ फैले हैं। जिस फर्श पर वो खड़ी है वहीं पर एक कबूतर का जोड़ा चित्रित है जो ये संदेश दे रहा है कि ये समय अपने प्रियतम से मिलने का है। कुछ टहनियाँ प्राचीर के पीछे से आती हुई चित्रित हैं। सौम्य रंगों का प्रयोग हुआ है चित्र में एवं इसका संयोजन रंग योजना बहुत ही सुन्दर है।

अपने भवन के बाहर खड़ी हुई यक्षिणी :

चित्र सं. 6 : अपने भवन के बाहर खड़ी हुई यक्षिणी

सा संन्यस्ताभरणमबला पेशलं धारयन्ती
शय्योत्सडे.ग निहितमसकृद दुःखदुः खेन गात्रम
त्वामय्यस्त्रं नवजलमयं मोचयिष्यत्यवश्यं प्रायः सर्वोभवति
करूणावृत्तिराद्रन्तिरात्मा।।उ0में0/

हिन्दी अनुवाद : वह अबला आभूषण त्यागे हुए अपने सुकुमार शरीर को अनेकों प्रकार के दुखों से विरह–सय्या पर तड़पते हुए किसी प्रकार रख रही होगी। उसे देखकर तुम्हारी भी आँखे बरस पड़ेंगी। मृदु ह्रदय वाले व्यक्तियों की चित्र–वृत्ति प्रायः करूणा से भरी होती है।

चित्र व्याख्या : इस चित्र में यक्षिणी को भवन के खंम्भे के सहारे खड़ा हुआ दिखलाया गया है। उसकी आँखों में पीड़ा है। बाल बिखरे हैं और वो अपने चारों तरफ घिरे हुए बादलों को देख रही है। यह चित्र भी वाश पद्धति में बना हुआ है। रंग सांमजस्य बहुत ही सौम्य है।

जलाशय में खिले हुये कमल :

चित्र सं. 7 : जलाशय में खिले हुये कमल

तस्मिनकाले नयनसलिलं योषितां खण्डिताना
शान्ति नेयं प्रणयिाभिरतो वर्त्म मानोस्त्यजाश
प्रालेयास्त्रं कमलवदनात्सोयि हर्तु नलिन्याः
प्रत्यावृत्तस्त्वयि कररूधि स्यादनल्याभ्यसूयः।। पू0में0/39

हिन्दी अनुवाद : रात्रि में विछोह सहने वाली खंण्डिता नायिकाओं के आँसू सूर्योदय की बेला में उनके प्रियतम पोंछते है। इसलिये तुम शीघ्र सूर्य का रास्ता छोड़ देना क्योंकि सूर्य की कमालिनी के पंकजमुख से ओसरूपी आँसू पोंछने के लिए लौटे होंगे। तुम्हारे द्वारा हाथ रोके जाने पर उनका रोष बढ़ेगा।

चित्र व्याख्या : इस चित्र में हरी–भरी घास के बीच सुन्दर जलाशय हैं जिसमें तीन कमल चित्रित हैं। बादलों के बीच से सूर्य की तीन किरणें तालाब में पड़ रही हैं। बीच वाली किरण से तीनों कमल खिल उठे हैं। बादलों का अंकन बहुत ही सजीव हुआ है इस चित्र में। रंगो का बहुत ही कम प्रयोग हुआ है या यूँ कह सकते है कि सौम्य एवं हल्के रंगों का प्रयोग हुआ है। हरे रंग की आभा पूरे चित्र में फैली है। सौन्दर्य और सुकून की दृष्टि से यह चित्र अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

गंभीरा नदी में बादलों का प्रतिबिम्ब :

गंभीरायाः पयासि सत्तिश्चेतसीव प्रसन्ने
छायात्मापि प्रकषति सुभगोलप्स्यते ते प्रवेशम्
तस्यादस्याः कुमुदविशदान्यर्हासित्वं न
धैर्यान्मोधीकर्तु चतुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि।। पू0मे0/44

हिन्दी अनुवाद : गंभीरा के चित्ररूपी निर्मल जल में तुम्हारे सहज सुन्दर शरीर का प्रतिबिम्ब पड़ेगा ही। कही फिर ऐसा न हो कि तुम उसके कमल से श्वेत और उछलतती शफरी से चंचल चितवनों की ओर अपने धीरज के कारण ध्यान न देते हुये उन्हें विफल कर दो।

चित्र सं. 8 : गंभीरा नदी में बादलों का प्रतिबिम्ब

चित्र व्याख्या : इस चित्र में गंभीरा नदी का चित्रण है जिसमें यक्ष बादलों से कह रहा है कि गंभीरा के निर्मल रूपी जल में तुम्हारे सहज सुन्दर शरीर का प्रतिबिम्ब पड़ेगा ही फिर कही ऐसा न हो की तुम उसके कमल से श्वेत और उछलती शफरी से चंचल चितवनों की ओर अपने धीरज के कारण ध्यान न देते हुये उन्हे विफल कर दो। जल में बादलों का प्रतिबिम्ब दिखलायी पड़ रहा है। नदी के किनारे हरा भरा तट चित्रित है जिस पर एक वृक्ष है और उसकी टहनियों में बादल उलझे हुये हैं।इसमें बादलों का बहुत ही सुन्दर अंकन है।

अपने प्रियतम की याद में सुंदरिया :

चित्र सं. 9 : अपने प्रियतम की याद में सुंदरिया

त्वामारूढ़ पवनपवीभुद्रगृहीताल्कान्ताः
प्रेक्षिस्पन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसन्त्यः।
कः संनद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षित जायां
न स्यादन्योऽत्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्ति :।। पू0मे0/8

हिन्दी अनुवाद : जब तुम आकाश में उमड़ते हुय उठोगे तो प्रवासी पथकों की स्त्रियां मुँह पर लटकते हुय घुंघरालें बालों को ऊपर फेंककर इस आशा से तुम्हारी ओर देखेगी कि जैसे उनका प्रियतम आ रहा हो। तुम्हारे घुमड़ने पर कौन साजन विरह में व्याकुल अपनी पत्नी के प्रति उदासीन रह सकता है।

चित्र व्याख्या : यह चित्र बहुत ही आकर्षक है और पूर्णतया सजीव है। काले घने बादल ऐसे लग रहे है जैसे तेजी से आ रहे हों मैदान में कही–कही हरी –हरी घास है। दूर वृक्ष है जो इस चित्र की और भी प्रभावी बना रहे हैं। कुछ सुंदर नवीन स्त्रियाँ जिनके चेहरे पर इंतजार की पीड़ा है खड़ी होकर श्रंगाररत होकर अपने प्रियतम का इंतजार कर रही हैं। वाश पद्धति में बना यह चित्र पूर्णतया सजीव हो उठा है और महाकवि कालिदास की पंक्तियों का सजीव चित्रण है।

अभिसारिका :

चित्र सं0 10 : अभिसारिका

गच्छन्तीनां रणवसतिं योषितां तत्र नक्तं
रूद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः
सौदामन्या करकानिकवसिनग्ध्या दर्शयेार्वी
तोयोत्सर्गस्तानितमुखरो मा स्मभूर्विक्लवास्ताः।। पू0मे0/37

हिन्दी अनुवाद : वहाँ उज्जयनी में रात के समय प्रियतम के भवनों को जाती हुई अभिसारिकाओं को जब घुप्प अंधेरे के कारण राज–मार्ग पर कुछ न सूझता हो, तब कसौटी पर कसी कंचनरेखा की तरह चमकती हुई बिजली से तुम उनके मार्ग में उजाला कर देना। वृष्टि और गर्जन करते हुये घेरना मत क्योंकि वे बेचारी डरपोक होती हैं।

चित्र व्याख्या : यह चित्र एक प्रसिद्ध चित्र है जिसे कई चित्रकारों ने चित्रित किया है। परन्तु शैलेन्द्रनाथ डे द्वारा चित्रित यह पूर्णतया मेघदूत के गहन अध्ययन के बाद अवनीन्द्र नाथ टैगोर एवं रायकृष्ण दास के मार्गदर्शन में चित्रित हुआ है इसलिए यह और महत्वपूर्ण हो जाता है। इस चित्र में रात का चित्रण है जिसमें बिजली चमक रही है। और एक नायिका अपने नायक से मिलने जा रही है। उसका आँचल लहरा रहा है। आँखों में एक बेसब्री है नायिका पूरी तरह श्रंगार किये हुये है बिजली की चमक से उसके गहने में चमक उठे हैं।

जैसा मेघ से यक्ष कहता है यह चित्र पूर्णतया वैसा ही है। सफेद धूसर रंग का इतना सुंदर प्रयोग हुआ है कि चित्र की सुंदरता और बढ़ गई है।

बादलों के बीच गंधर्व युगल :

चित्र सं. 11 : बादलों के बीच गंधर्व युगल

अक्षय्यान्तर्भवननिधय : प्रत्यहं रक्तकठै
रूदग्याभ्दर्धनपतियशः किनरैर्यत्र सार्धम्
वैभ्राजाख्यं बिबुधवनितावारमुख्यसहाया
बद्धालापा बहरूपवन कामिनों निर्विशन्ति।। उ0मे0/8

हिन्दी अनुवाद : वहां अल्का में कामीजन अपने महलों के भीतर अखूट धनराशि रखे हुये सरसुन्दरी वारांगनाओं से प्रेमालाप में मग्न होकर प्रतिदिन सुरीले कंण्ठ से कुबेर का यश गाने वाले किन्नरों के साथ चित्र रथ नामक बाहरी उद्यान में विहार करते हैं।

चित्र व्याख्या : यह चित्र रंग–बिरंगे बादलों से घिरा है। जिसे देखकर यह प्रतीत होता है कि चित्रकार बादलों को चित्रित करने में प्रवीण था। बादलों के बीच ही बगुलों की लम्बी कतार चित्रित है। बादलों के बीच गंधर्व अप्सराओं के साथ प्रेम में डूबे हुये हैं। यह चित्र अल्कापुरी के सौन्दर्य को दर्शा रहा है जहाँ घने मेघ के बीच सभी प्रेम में डूबे है सिर्फ एक विरहणी यक्षिणी को छोड़कर। यह चित्र वाश तकनीक में बना है और भारत कला भवन वाराणसी के संग्रहालय में सुरक्षित है।

यक्षिणी को संदेश सुनाते मेघ :

चित्र सं. 12 :
यक्षिणी को संदेश सुनाते मेघ

तामुत्थात्यं स्वजलकाणिका शीतलेन निले प्रत्याश्वास्तां
सममभिनवैर्जालकैर्मालतीनाम्
विद्युदर्भ : स्तिमित नयनां त्वत्सनाथे गवाक्षे
वक्तु धीर : स्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथा।। उ0मे0/35

हिन्दी अनुवाद : हे मेघ फुहार उड़ाती हुई ठंडी वायु से उसे जगाओगे तो मालती की नई कलियों की तरह वह खिल उठेगी तब गवाक्ष में बैठे हुये तुम्हारी ओर विस्मय भरे नेत्रों से एक टक देखती हुई उस मानिनी से बिजली को अपने भीतर ही छिपाकर धीरे से मेरा संदेश कहना आरम्भ करना।

चित्र व्याख्या : इस चित्र में बादलों से घिरी यक्षिणी का चित्रण है। काले–काले बादल उसके पलंग के ऊपर महल में प्रवेश करके आ गये है। रात्रि का चित्रण बड़ी ही कुशलता से किया गया है। यक्षिणी जग गयी है और अपने बाये हाथ को गाल पर रखकर सर को उठा रही है। ऐसा लग रहा है कि बादल उससे संवाद कर रहे हैं। चित्र में सबसे आगे वृक्ष का ऊपरी हिस्सा चित्रित है जिससे यह प्रतित हो रहा है कि वह अपने महल के ऊपरी हिस्से के बरामदे में लेटी है। खिड़कियों से दूर पर्वत दिखलायी पड़ रहे हैं। जो इस चित्र को और प्रभावशाली बना रहे हैं। यह चित्र संयोजन, प्रसंग, सौंदर्य आदि की दृष्टि से ही बहुत ही उत्कृष्ट है।

निष्कर्ष :

इस तरह से एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति मेघदूत का चित्रण यथार्थ रूप में शैलेन्द्रनाथ डे ने किया जो अत्यंत दुर्लभ है। यह पूरी सीरीज भारतीय कला के लिए एक धरोहर है जो यह दर्शाता है कि कला एवं साहित्य एक दूसरे के पूरक है। महाकवि कालिदास की भी चित्रकला में गहरी रूचि थी इसीलिये वह मेघदूत में एक प्रसंग में यक्ष को चित्र बनाते हुये वर्णित करते है। अल्कापुरी में भित्तिचित्रों का वर्णन करते हुये अपना प्रेम दर्शाते हैं। इसलिये हमारी भारतीय परम्परा में जो संदेश है वह आज के समय में भी अत्यन्त प्रासंगिक है। मुख्य रूप से कालिदास के ग्रन्थ जिनमें मानव जीवन को जीने की कला सिखलाई गयी है। एक सभ्य समाज, प्रेम सौहार्द आदि का सुंदर उदाहरण है कालिदास के ग्रन्थों में। आज भी चित्रकारों को अपने चित्रों में ऐसे संदेशो को चित्रित करने की अवश्यकता है जो एक बड़े वर्ग को अपनी समृद्धि शाली संस्कृति और सभ्यता का संदेश दे सके।

संदर्भ सूची :

1. *प्रताप रिता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास।*
2. *सिंह प्रमिला, (2001), शैलेन्द्र नाथ डे की कलाकृतियां, शर्मा एण्ड ब्रदर्स, आगरा, पृष्ठ सं. 45–70।*
3. *भारद्वाज विनोद, (2004), वृहद आधुनिक कला कोष, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 20–80।*
4. *मांगो प्राणनाथ, (2011), भारत की समकालीन कला (एक प्ररिप्रेक्ष्य) नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ – 85–100।*
5. *अग्रवाल गिरिराज किशोर, (2012), आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन, आगरा।*
6. *रमाशंकर त्रिपाठी, (2015), महाकवि कालिदास प्रणीतं मेघदूतम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 37–150।*
7. *चटर्जी गौतम, (2010), आसित रवीन्द्र हाल्दार के कला अनुशीलन कालीदीर्घा, सम्पादक– अवधेश मिश्र, लखनऊ, अंक 20, पष्ठ 18–21।*
8. *विश्वास टी.के., (1996), शैलन्द्र नाथ डे और उनकी मेघदूत चित्रावली, स्व शिल्प, सम्पादक–श्याम बिहारी अग्रवाली, पृष्ठ 11–19।*
9. *मिश्र अवधेश, वाश में मेघदूत, हरिहर लाल मेढ़, कलादीर्घा, लखनऊ वर्ष–10, अंक 20, पृष्ठ 34–40।*

****